जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 04 प्रभात बीकानेर, शुक्रवार 29 जुलाई, 2022 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रू.

वर्तमान में सी लायन्स की कुल 6 प्रजातियां मौजूद हैं। तीन प्रजातियां इंटरनैशनल यूनियन फॉर कंज़वेशन ऑफ नेचर (आई.यू.सी.एन.) द्वारा ''एन्डेन्जर्ड'' घोषित की गई हैं और एक अमेरिका के एन्डेन्जर्ड स्पीशीज़ एक्ट के तहत संकटग्रस्त घोषित है। आनुवांशिक रूप से पृथक, ऑस्ट्रेलियन सी लायन की आबादी 6500 है और वैश्विक स्तर पर इनकी आबादी घट रही है। आई.यू.सी.एन. द्वारा संटकग्रस्त घोषित ये जन्तु राज्य स्तर पर अपनी रेंज में भी खतरे में हैं। इसी प्रकार गैलापागोस सी लायन, जिन्हें 2008 में आई.यू.सी.एन. ने ''वल्नरेबल'' वर्ग में रखा था, अब ''एन्डेन्जर्ड'' वर्ग में आ गए हैं। बीसवीं सदी में इनका अंधाधुंध शिकार किया गया, जिसमें ये विलुप्ति के कगार पर पहुंच गए, इसलिए इन्हें इक्वडोरियन कानून के तहत संरक्षण दिया गया। वर्ष 2015 की अलनीनो घटना के बाद इनकी आबादी 24 प्रतिशत तक कम हो गई। वर्ष 2015 में आई.यू.सी.एन. ने न्यूज़ीलैण्ड सी लायन्स को भी एन्डेन्जर्ड वर्ग में शामिल किया। इनकी आबादी कुल 3000 है। दूसरी तरफ, स्टैलर सी लायन को हालांकि आई.यू.सी.एन. संकटग्रस्त नहीं मानता पर ई.एस.ए. के तहत ये एन्डेन्जर्ड और मरीन मैमल प्रोटैक्शन एक्ट के तहत संरक्षित हैं। कोस्टल प्लास्टिक कचरा और समुद्र में बिखरा तेल स्टेलर सी लायन्स के लिए बड़ा खतरा है। एक शोध में पता लगा कि ब्रिटिश कोलम्बिया में तेल बिखरने से सर्वाधिक प्रभावित जीवों में चौथे नम्बर पर स्टैलर सी लायन्स हैं। नॉर्थ वैस्ट पैसिफिक तट रेखा पर कभी काफी तादाद में मिलने वाले जापानी सी लायन 1950 के दशक के बाद से नज़र नहीं आए और 1990 के दशक में इन्हें अधिकृत रूप से लुप्त घोषित कर दिया गया। सी लायन को प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, अन्य प्रजातियों से फैलने वाले रोगों और ''बाय कैच'' बनने का जोखिम भी है। वर्ष 2021 में एक रिपोर्ट में पता चला था कि 40 साल से कैलिफोर्निया सी लायन्स एक रहस्यमय कैंसर से मर रहे हैं। इसका कारण है औद्योगिक कचरा, खासकर कीटनाशक व ऑइल रिफाइनरीज़ का कचरा। सी लायन्स की सभी प्रजातियाँ जलवायु परिवर्तन से भी प्रभावित हैं। तीन दशकों तक गल्फ ऑफ कैलिफोर्निया में ओशन वॉर्मिंग का अध्ययन कर रहे वैज्ञानिकों ने इसका संबंध, 1991 से 2019 के बीच सी लायन की आबादी में आई 65 प्रतिशत गिरावट से जोड़ा।

पार्थो को कैबिनेट व पार्टी से निकाला तृणमूल कांग्रेस ने

पार्टी इससे ममता बनर्जी की छवि पर टैफलॉन का रोगन चढ़ाना चाहती है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। तृणमूल कांग्रेस आखिरकार नींद से जाग गई और समझ गई कि गिरफ्तार पार्थो चटर्जी को पार्टी में और बंगाल मंत्रिमंडल में बनाए रखना असुविधाजनक हो सकता है।

पार्टी ने इसलिए उन्हें मंत्रिमंडल से हटाने का फैसला कर लिया है। उन्हें कई सारे विभागों का मंत्री बनाकर रखा गया था। उनमें सबसे महत्वपूर्ण था उद्योग सहित कई अन्य विभाग उनसे छीन लिए गए।

पार्टी को यकीन है कि इससे ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस को ''टैफ्लॉन कोटिंग'' हासिल करने में मदद मिलेगी, यह एक ऐसा घटक है जिसका इस्तेमाल ''स्क्रैचप्रूफ'' चमक देने के लिए होता है।

पार्थो चटर्जी को हटाने की घोषणा किसी और ने नहीं बल्कि पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने की और कहा कि पार्थो ने पार्टी के ईमानदारी पर चलने के उसूल का पालन नहीं किया इससे वे आहत है।

हालांकि यह सर्व विदित है कि पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की मुखिया और राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की जानकारी के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। करोड़ों की सम्पत्ति और कैश जमा हो जाए और ममता बनर्जी को भनक तक ना लगे, यह बात गले नहीं उतरती।

तृणमूल के पार्थो से सभी संबंध तोड़ने के बावजूद भी सबको यही लग रहा है कुछ तो गड़बड़ है। किसी को भी यकीन नहीं है कि तृणमूल से पार्थो को पूरी तरह से हटा दिया गया है।

यह बात कोई भी भूला नहीं है कि अभी कुछ समय पहले ही कई घोटालों में अभिषेक बनर्जी का नाम भी सामने आया था।

यह भी अफवाह थी कि गत विधानसभा चुनाव से पहले ''कट मनी'' अपने चरम पर था। और बुराई की हद यह थी कि ममता बनर्जी ने सार्वजनिक रूप से यह बात स्वीकारी थी।

तृणमूल में रह चुके लोगों ने पहले ही बात करना शुरू कर दिया है कि पार्टी में भ्रष्टाचार किस हद तक बढ़ गया है। बैसाखी चटर्जी, जो तृणमूल के एक पूर्व दिग्गज की ''खास मित्र'' रही हैं, और जिसका रिश्ता कभी चर्चा का विषय था, ने बहुत बड़े भ्रष्टाचार की तरफ इशारा किया था।

उसने कहा कि जो कुछ मिला है वह तो बहुत कम है। दूसरी और पार्थो की महिला मित्र अर्पिता मुखर्जी ने भी तोते की तरह बोलना शुरू कर दिया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पर जन मानस से यह ''इम्प्रैशन'' नहीं धुल पा रहा कि, पार्टी में कुछ गड़बड़ तो है ही।
- पार्थो चटर्जी की सहचरी व तृणमूल के एक पुराने मठाधीश की गर्लफ्रैंड बैसाखी चटर्जी ई.डी. से खुलकर सहयोग कर रही हैं। आगे से आगे बढ़कर, दोनों महानुभावों के वो सब ठिकाने बात रही हैं, जहां सरकारी लूट से प्राप्त करोड़ों रूपयों का सोना व आभूषण रखे गये हैं।
- कुछ समय पूर्व पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव, ममता जी के भतीजे, अभिषेक बनर्जी का नाम भी उछला था भ्रष्ट आचरण के प्रसंग में।
- विधानसभा चुनाव से कुछ समय पहले, ''कट मनी'' की चर्चा इतनी चरम पर पहुंच गयी थी कि, ममता बनर्जी ने भी इस बीमारी के व्यापक प्रचार की बात स्वीकार की थी।
- जिस प्रकार से एक के बाद एक भ्रष्टाचार के प्रकरण सामने आ रहे हैं, एक व्यंग्य, ''यह तो ट्रेलर है, पिक्चर तो अभी बाकी है'', सही उतरता नज़र आ रहा है।

कर्नाटक में भाजपा भी कांग्रेस का अनुसरण करने की तैयारी में?

कर्नाटक के मुख्यमंत्री अपनी ही पार्टी के कार्यकर्ताओं के आक्रमण से भयभीत से हैं

-लक्ष्मण कूची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। कर्नाटक में दक्षिण कन्नड जिले के बेल्लार स्थान पर भाजपा युवा मोर्चा ऐक्टिविस्ट प्रवीण नेत्तारू की नृशंस हत्या को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं तथा दक्षिणपंथी ग्रुपों द्वारा किये जा रहे कई प्रदर्शनों के चलते, जब समारोह के मुख्य अतिथि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने समारोह से अलग रहने का ले लिया, तो इस निर्णय के बाद, मुख्यमंत्री समारोह को निरस्त करने के लिये मजबूर हो गये।

वस्तुतः, पार्टी कार्यकर्ता तथा हमदर्दों का क्रोधोन्माद इस प्रकार का था कि उन्होंने राज्य भाजपा अध्यक्ष नलिन कुमार कटील तथा उनके साथियों को बुधवार को उस समय नेत्तारू गाँव से बाहर खदेड़ दिया, जब वे मृतक भाजपा कार्यकर्ता को श्रद्धांजलि देने वहाँ गये थे। वहाँ, ''भाजपा हाय, हाय'' के नारे लगाये जा रहे थे। जिस वाहन में वे आये थे, उस वाहन को भीड़ ने घेर लिया था तथा उसे उलटने की कोशिश की गई थी। उस समय ड्राइवर गाड़ी में ही था। खतरे को भाँपते हुये, भाजपा अध्यक्ष को वहाँ से एक अन्य वाहन में ले जाया गया।

दक्षिण कन्नड़ तथा अन्य जिलों के बहुत से पार्टी कार्यकर्ताओं विरोध स्वरूप अपने इस्तीफे भी दे दिये हैं।

अगर पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा सवाल पर सवाल किये जाना तथा अपशब्दों का प्रयोग किया जाना किसी मुख्यमंत्री का अपमान है, तो पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येद्दियुरप्पा के निकटस्थ महिला-पुरुषों द्वारा मुख्यमंत्री की इस विफलता पर उनकी घोर आलोचना किया जाना तथा भाजपा कार्यकर्ताओं का बचाव करना भाजपा के अन्दर पनप रही किसी खास गड़बड़ी (फॉल्ट लाइन) को उजागर करता है। प्रसंगवश बात दें कि कृषि तथा किसान कल्याण विभाग की केन्द्रीय राज्य मंत्री शोभा करान्दलजे, जिन्हें येद्दियुरप्पा का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मुख्यमंत्री पर आरोप है कि, वे पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा प्रदान करने में असफल रहे हैं।
- जैसा कि विदित ही है, भाजपा के युवा मोर्चा के नेता प्रवीण नेतारू की दक्षिण कन्नड़ के बेलार क्षेत्र में हत्या से भाजपा कार्यकर्ता बहुत उत्तेजित हैं, अपनी पार्टी की सरकार के खिलाफ।
- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व उनके साथी जब प्रवीण के परिवार से सहानुभूति जताने नेतारू पहुंचे तो पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनके वाहन को घेर लिया व उल्टा करने की कोशिश। कुछ समर्थकों ने प्रदेशाध्यक्ष को एक अन्य वाहन में वहां से निकालने में ही समझदारी मानी।
- मुख्यमंत्री को अपने शासन की वर्षगांठ पर आयोजित समारोह को रद्द करना पड़ा। भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा जो समारोह के मुख्य अतिथि थे, भी अटपटी स्थिति से बच गये।
- पूर्व मु.मंत्री येदियुरप्पा के समर्थकों ने मु.मंत्री की इस असफलता पर काफी सार्वजनिक रोष प्रकट किया तथा भाजपा का आंतरिक सत्ता संघर्ष भी खुल कर सामने आया।

महाराष्ट्र

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र स्टेट इलैक्शन कमीशन (एस.ई.सी.) को 367 स्थानीय निकायों के चुनावों का पुनर्निधारण करने से गुरूवार को प्रतिबंधित कर दिया। एस.ई.सी. अदर बैकवर्ड क्लासेस (ओ.बी.सी.) को आरक्षण की अनुमति देने के लिए इन चुनावों का पुनर्निधारण करना चाहता था।

जस्टिस ए.एम. खानविलकर की अध्यक्षता वाली एक बैंच ने एस.ई.सी. से कहा कि वह आरक्षण के बिना चुनाव सम्पन्न करवाए। कोर्ट ने उसे चेतावनी दी कि यदि वह शीर्ष अदालत के मई में जारी आदेश के खिलाफ जाकर चुनावों की ताजा अधिसूचना जारी करता है तो उसे अदालत की अवमानना का सामना करना पड़ेगा। बैंच जस्टिस उदय उमेश ललित, जस्टिस एस. रविन्द्र भट और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के स्थानीय निकाय चुनावों को ओ.बी.सी. आरक्षण की वजह से रीशिड्यूल करने पर रोक लगा दी है।

क्या पंजाब की भांति, कर्नाटक में भी कांग्रेस आत्मदाह की तैयारी में?

पूर्व मु.मंत्री एस. सिद्धारमैया व प्रदेशाध्यक्ष डी.के. शिव कुमार के बीच प्रतिस्पर्धा चरम सीमा पर है

-लक्ष्मण वैंकट कूची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कांग्रेस अगले साल होने वाले कर्नाटक विधानसभा चुनावों में अपनी हार के लिये कड़ी मेहनत कर रही है क्योंकि राज्य के दो बहुत बड़े पार्टी नेताओं-पूर्व मुख्यमंत्री एस. सिद्धारमैया तथा के.पी.सी.सी. अध्यक्ष डी.के. शिव कुमार के बीच जबरदस्त ठनी हुई है।

कर्नाटक के राजनैतिक पर्यवेक्षक इस बात पर एकमत हैं कि राज्य विधानसभा से पहले, कांग्रेस अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने में लगी हुई है। कर्नाटक ऐसा पहला दक्षिणी भारतीय राज्य है, जहाँ भाजपा ने पैर जमा लिये हैं यह राज्य भाजपा के लिये दक्षिण क्षेत्र में अपने विस्तार की कुंजी की तरह है, जिस क्षेत्र से लोकसभा के लिये 130 सांसद चुनकर जाते हैं। 2019 के चुनावों में, भाजपा ने इस राज्य में इकतरफा जीत हासिल करते हुये, 28 में से 25 सीटों पर कब्जा कर लिया था।

कर्नाटक में अगले वर्ष विधानसभा चुनाव होने हैं। जहाँ भाजपा चुनाव के लिये एक सक्षम प्रचार की तस्वीर प्रोजैक्ट कर रही है, वहीं कांग्रेस में चल रही अंदरूनी लड़ाई तथा दोनों नेताओं के बीच चल रहीं मुख्यमंत्री बनने की चालबाजियाँ निश्चित रूप से कांग्रेस के लिए बहुत मंहगी सिद्ध होने वाली हैं। के.पी.सी.सी. अध्यक्ष शिव कुमार, जिन्होंने पार्टी के कई संकटों में संकटमोचक की भूमिका अदा की है, ने मुख्यमंत्री बनने की इच्छा जाहिर कर दी थी, जिसका पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कड़ा प्रतिवाद किया था। सिद्धारमैया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह कांग्रेस की आंतरिक कलह का रंगमंच बन गये हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- जब से शिव कुमार ने मुख्यमंत्री बनने की महत्वकांक्षा सार्वजनिक की, सिद्धारमैया ने सार्वजनिक प्रतिरोध किया। झगड़ा इतना बढ़ गया कि, सिद्धारमैया के समर्थकों ने, जिनमें पार्टी के विधायक जमीर अहमद प्रमुख हैं, सिद्धारमैया का जन्म दिवस जोर-शोर से मनाने की तैयारी शुरू की और इस समारोह का आयोजन, शक्ति प्रदर्शन का मैदान बन गया है।
- अगले साल कर्नाटक में विधानसभा चुनाव हैं, क्या कांग्रेस पंजाब का इतिहास दोहरायेगी?

सुनवाई में देरी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट ने इस खबर पर गुरूवार को असंतोष जाहिर किया कि वह ईसाई संस्थानों पर कथित हमलों की सुनवाई में विलम्ब कर रहा है। कोर्ट ने कहा कि ''जजों को निशाना बनाने की भी कोई सीमा होती है।''

जस्टिस सूर्यकांत के साथ एक बैंच में बैठे जस्टिस डी.वाय. चन्द्रचूड़ ने कहा ''पिछली बार इस मामले को लिस्ट नहीं किया जा सका क्योंकि मुझे कोविड हो गया था। आज यह अखबारों में छपवा दो कि सुप्रीम कोर्ट सुनवाई में विलम्ब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस डी. वाय चन्द्रचूड़ ने सुनवाई में देरी होने पर जजों को निशाना बनाए जाने की निंदा की और कहा कि, जजों को टारगैट करने की भी हद होती है।

स्मृति ईरानी को इतना गुस्सा क्यों आता है?

क्या गुस्से का कारण है, उनके परिवार द्वारा गोवा में चलाया जा रहा रैस्टोरैंट व रैस्टोरैंट से संबंधित अन्य गतिविधियां?

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। स्मृति ईरानी को गुस्सा क्यों आता है तथा वे इतनी आक्रामक क्यों हो जाती हैं कि असभ्यता की सीमा को स्पर्श करने लगती हैं। क्या केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी उनके परिवार की गतिविधियों की मोटी हो चुकी फाइल के कारण किसी संकट में हैं तथा इसी कारण वे प्रधानमंत्री को खुश करने की कोशिश में, सोनिया गांधी पर हमला बोलते समय, आपे से बाहर हो रही हैं। मोदी जी को यह पसंद तो है तथा जब गांधी परिवार पर हमला होता है तो वे इसकी प्रशंसा तक करते हैं।

और आज लोकसभा में बिल्कुल यही हुआ। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने जब भारतीय गणतंत्र की नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपत्नी कहकर सम्बोधित किया तो भाजपा सांसदों ने हंगामा खड़ा कर दिया तथा अधीर रंजन चौधरी एवं सोनिया गांधी से क्षमा याचना करने की मांग करने लगे।

हंगामे के चलते, सदन स्थगित कर दिया गया। सोनिया गांधी बाहर जाने के लिये तैयार होते हुये, पीछे मुड़ीं तथा सत्ता पक्ष में बैठीं रमादेवी के पास गईं और उनसे कहा कि अधीर रंजन ने अपने कथन के लिये माफी मांग ली है। इसके बाद उन्होंने रमा देवी से पूछा कि आखिर उन (सोनिया) पर हमला क्यों बोला जा रहा है?

ठीक तभी स्मृति ईरानी बीच में कूद पड़ी तथा उन्होंने जानना चाहा कि वे उनकी मदद कैसे कर सकती हैं। स्मृति ईरानी के बीच में दखल दिया तो सोनिया ने कहा, ''मैं आपसे बात करना नहीं चाहती।'' सोनिया मुड़ीं और उनसे कहा, ''मुझसे बात मत कीजिये।'' इस पर, ईरानी ने फिर आक्रामक प्रतिक्रिया दी तथा गांधी से कहा कि वे नहीं जानतीं कि वे कौन हैं। सोनिया गांधी ने उनसे फिर कहा कि वे (ईरानी) उनसे (सोनिया) से बात नहीं करें।

एक बयान में कांग्रेस के प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा कि, कई सांसदों ने देखा था कि स्मृति ईरानी ने सोनिया गांधी को अपशब्द कहे व अपमानित किया जब सोनिया ने विनम्रता से यह कहा कि, वे अन्य महिला सांसद से बात कर रही हैं तो ईरानी चिल्लाने लगी, ''आप जानती नहीं हैं मैं कौन हूँ?''

जयराम ने कहा कि क्या एक वरिष्ठ सांसद से ऐसे बात की जाती है, वो भी उससे जो पार्टी की अध्यक्ष हैं। ईरानी राजनैतिक रुप से भी अपनी बात कह सकती थीं। इस तरह का आचरण संसद की मानमर्यादा के खिलाफ है।

इससे पूर्व ही, ईरानी ने सोनिया गांधी पर अत्यंत कठोर शुरु कर दिया तथा उनसे माफी मांगने की माँग कर दी थी। उन्होंने कह दिया था, ''सोनिया गांधी ने देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन महिला के अपमान का समर्थन किया है। यही नहीं, आवेश में आ चुकी ईरानी ने सोनिया गांधी को ''आदिवासी- विरोधी, दलित-विरोधी तथा नारी-विरोधी'' तक कह दिया।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी सोनिया गांधी पर हमला बोल दिया तथा कहा कि भाजपा सांसद स्वयं को सोनिया गांधी से आशंकित महसूस कर रहे हैं। जब सोनिया ने कहा कि अधीर पहले ही माफी मांग चुके हैं तो निर्मला सीतारमण ने उन पर देश को गुमराह करने का आरोप लगाया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- समझा जा रहा है कि प्रधानमंत्री की गुड बुक्स में आने और भावी कार्यवाही से बचने की कोशिश में स्मृति इरानी संसद में सोनिया गांधी पर इतनी बुरी तरह से चिल्ला रही थीं।
- लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन ने नव निर्वाचित राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को ''राष्ट्र पत्नी'' कह कर संबोधित कर दिया, जिस पर हंगामा खड़ा हो गया, हालांकि अधीर रंजन ने इसके लिए तुरंत माफी मांग ली, पर भाजपा सांसदों ने सोनिया गांधी को निशाने पर ले लिया।
- सोनिया ने जब सत्तारूढ़ खेमे की रमा देवी से कहा कि, अधीर रंजन ने माफी मांग ली है फिर उनके (सोनिया के) के खिलाफ नारेबाजी क्यों हो रही है, तो स्मृति इरानी बीच में कूद पड़ीं और सारा विवाद शुरू हो गया।

बहस

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 28 जुलाई। सरकार ने विपक्ष को अवगत करवा दिया है कि वह कीमत वृद्धि पर अगले सप्ताह संसद में बहस करवाने को तैयार है। सरकार ने पहले इस मुद्दे का प्रतिरोध किया जिसके परिणामस्वरुप विपक्ष ने 18 जुलाई से शुरु हुए मानसून सत्र के प्रारंभ से ही सदन के दोनों सदनों का काम-काज बाधित कर रखा है।

हालांकि, विपक्षी पार्टियों ने बहस की एक शर्त पर जोर दिया कि पहले लोकसभा के उन चार कांग्रेस सांसदों का निलम्बन वापस लिया जाए जिन्हें सत्र की शेष अवधि के लिए बाहर किया गया है। यह गुरुवार को निलम्बित किए गए तीन सांसदों सहित राज्यसभा के उन 23 सांसदों के निलम्बन के केस में जरुरी नहीं होगा क्योंकि उनका निलम्बन इस सप्ताह के लिए ही किया गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सरकार अगले सप्ताह संसद में मंहगाई पर बहस के लिए मान गई है।